सुविचार– अगर आप दूसरों के बारे में भी सोचते हैं तो आप सच्चे इंसान हैं.

कहानी

हौसले की उड़ान : जिसने हालातों को बदल दिया

एक छोटे से गांव में अर्जुन नाम का एक लड़का रहता था। उसका परिवार बहुत गरीब था, लेकिन उसके सपने बहुत बड़े थे। अर्जुन के पिता एक मजदूर थे और मां घर का काम करने के साथ-साथ सिलाई करके परिवार की मदद करती थीं। घर की आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं थी, फिर भी माता-पिता हमेशा अर्जुन को पढ़ने और जीवन में आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करते थे।

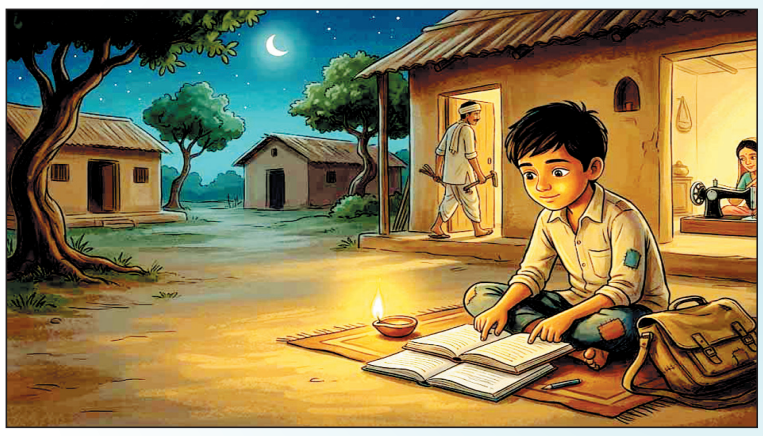

अर्जुन बचपन से ही मेहनती और समझदार था। उसे नई चीजें सीखने में बहुत रुचि थी। वह अक्सर अपने पिता से पूछता था, 'पिताजी, क्या गरीबी हमारे सपनों को रोक सकती है?' पिता मुस्कुराकर कहते, 'बेटा, गरीबी सिर्फ एक परिस्थिति है, लेकिन मेहनत और हिम्मत इंसान की असली ताकत होती है।'

अर्जुन ने अपने पिता की बात को हमेशा याद रखा। वह स्कूल जाने से पहले घर के कामों में हाथ बंटाता और खाली समय में पढ़ाई करता। उसके पास महंगी किताबें नहीं थीं, न ही पढ़ाई के लिए अलग कमरा था। वह रात में मिट्टी के दीपक की रोशनी में बैठकर पढ़ाई करता था।

गांव के कुछ लोग उसकी मेहनत देखकर उसका हौसला बढ़ाते थे, लेकिन कुछ लोग उसका मजाक भी उड़ाते थे। वे कहते, 'इतनी मेहनत करके भी क्या मिलेगा? बड़े सपने देखना छोड़ दो।' अर्जुन इन बातों से दुखी जरूर होता था, लेकिन उसने कभी अपने लक्ष्य से ध्यान नहीं हटाया।

एक दिन स्कूल में प्रधानाचार्य ने घोषणा की कि जिले में एक बड़ी परीक्षा होने वाली है। इसमें सफल होने वाले विद्यार्थियों को आगे की पढ़ाई के लिए सहायता मिलेगी। अर्जुन ने इस परीक्षा में भाग लेने का फैसला किया। उसके सामने कई चुनौतियां थीं। परीक्षा की तैयारी के लिए उसके पास पर्याप्त साधन नहीं थे, लेकिन उसने हार नहीं मानी।

वह रोज सुबह जल्दी उठता, पढ़ाई करता और अपने शिक्षकों से मार्गदर्शन लेता। जब भी उसे कोई कठिनाई आती, वह उसे सीखने का अवसर मानता। धीरे-धीरे उसकी मेहनत रंग लाने लगी। परीक्षा का दिन आया। अर्जुन ने पूरे आत्मविश्वास के साथ परीक्षा दी। परिणाम आने में कई दिन लग गए। इन दिनों उसके मन में कई सवाल आते थे, लेकिन उसने धैर्य बनाए रखा।

जब परिणाम घोषित हुआ तो पूरे गांव में खुशी की लहर दौड़ गई। अर्जुन ने जिले में पहला स्थान प्राप्त किया था। जिसे लोग कभी कमजोर समझते थे, उसने अपनी मेहनत से सबको जवाब दे दिया था।

अर्जुन को छात्रवृत्ति मिली और उसे शहर के अच्छे कॉलेज में पढ़ने का मौका मिला। गांव छोड़ते समय उसकी आंखों में खुशी के साथ-साथ अपने माता-पिता के संघर्ष की यादें भी थीं। उसने मन में ठान लिया कि वह जीवन में कुछ ऐसा करेगा जिससे उसके माता-पिता को गर्व महसूस हो।

शहर में पढ़ाई करना आसान नहीं था। वहां उसे नए माहौल, नए लोगों और नई चुनौतियों का सामना करना पड़ा। कई बार उसे असफलता भी मिली। कुछ परीक्षाओं में वह उम्मीद के अनुसार प्रदर्शन नहीं कर पाया। लेकिन उसने असफलताओं से सीख ली और अपनी गलतियों को सुधारना शुरू किया। कुछ वर्षों बाद अर्जुन ने अपनी पढ़ाई पूरी की और एक सफल अधिकारी बन गया। जब वह अपने गांव वापस लौटा तो लोगों ने उसका भव्य स्वागत किया। जिन लोगों ने कभी उसका मजाक उड़ाया था, वे अब उसकी सफलता की तारीफ कर रहे थे।

अर्जुन ने अपनी सफलता को सिर्फ अपने तक सीमित नहीं रखा। उसने गांव में एक पुस्तकालय बनवाया और गरीब बच्चों की पढ़ाई में मदद करने लगा। वह बच्चों से कहता था, 'सपने देखने के लिए अमीर होना जरूरी नहीं है, लेकिन उन्हें पूरा करने के लिए मेहनत और विश्वास जरूरी है।'

अर्जुन की कहानी पूरे गांव के लिए प्रेरणा बन गई। उसने साबित कर दिया कि परिस्थितियां चाहे कितनी भी कठिन क्यों न हों, अगर इंसान में मेहनत करने का जज्बा और आगे बढ़ने का साहस हो तो वह अपनी किस्मत बदल सकता है।

सीख :
जीवन में सफलता उन्हीं लोगों को मिलती है जो कठिनाइयों से डरते नहीं, बल्कि उनका सामना करते हैं। मेहनत, धैर्य और आत्मविश्वास ऐसी शक्तियां हैं जो किसी भी इंसान को अपने सपनों तक पहुंचा सकती हैं।

अंतर ढूंढो

नीचे दिये गये दोनों चित्र देखने में समान हैं लेकिन उनमें कुछ अंतर हैं जिन्हें आप ढूंढकर निकालें.

उत्तर– 1. पतंग अलग-अलग है 2. नीचे वाले चित्र में फुटबॉल नहीं है 3. भाग रही लड़की का बैग का कलर अलग है 4. पहले चित्र में पेड़ पर एक चिड़िया है 5. भाग रहे एक बच्चे के सिर पर टोपी नहीं है.

बूझो तो जानें

4**ऐसी** कौन-सी चीज है,
जिसे जितना निकालते जाओ,
वह उतनी ही बड़ी होती जाती है?

उत्तर:गड्ढा

4**चार** पैर हैं मेरे,
फिर भी मैं चल नहीं पाता।
घर में रहता हूं,
पर घर नहीं बनाता।

उत्तर: मेज

4बिना पंख के उड़ती हूं,
बिना आंखों के रोती हूं,
बताओ मैं कौन हूं?

उत्तर: बादल

4काला हूं पर कौआ नहीं,
लंबा हूं पर सांप नहीं,
तेल लगाकर चमकता हूं,
बताओ मैं कौन हूं?

उत्तर: बाल

4सुबह चार पैरों पर चलती,
दोपहर दो पैरों पर,
शाम तीन पैरों पर चलती है।

उत्तर: इंसान (बचपन, जवानी और बुढ़ापा)

भूल भुलैया

हंसी-ठिठोली

4 **टीचर** – बताओ, सबसे ज्यादा नशा किस चीज में होता है?
छात्र – किताबों में।
टीचर – वो कैसे?
छात्र – क्योंकि किताब खोलते ही नींद आने लगती है।

4 **पत्नी** – सुनिए, मैं 20 साल पहले जैसी दिखती थी वैसी ही दिख रही हूं ना?
पति – हां बिल्कुल...
पत्नी – सच में?
पति – हां, क्योंकि पहले भी तुम मुझे डराती थीं और आज भी डराती हो।

4 **डॉक्टर** – आपको आराम की जरूरत है, ये नींद की गोलियां ले जाइए।
मरीज – डॉक्टर साहब, ये कब खानी हैं?
डॉक्टर – अपने लिए नहीं, अपने परिवार वालों को दे देना... आपको आराम मिल जाएगा। ??

4 **दोस्त** – भाई, तू इतना खुश क्यों है?
दूसरा दोस्त – मेरी पत्नी ने कहा कि मैं बहुत समझदार हूं।
दोस्त – फिर?
दूसरा दोस्त – अब मुझे शक है कि वह किसी और से तुलना कर रही थी।

4 **बच्चा** – पापा, मुझे बाइक चाहिए।
पापा – पहले पढ़ाई में अच्छे नंबर लाओ।
बच्चा – ठीक है पापा, बाइक की जगह हेलमेट दिला देना।

4 **पति** – तुम्हारी मुस्कान बहुत प्यारी है।
पत्नी – सच में?
पति – हां, क्योंकि जब तुम मुस्कुराती हो तो मुझे डर नहीं लगता।

कविता ‘नई सुबह का इंतजार ‘

अंधेरी रात के बाद सवेरा जरूर आता है,
टूटा हुआ इंसान भी फिर मुस्कुराता है।
राहों में चाहे कितने कांटे बिछ जाएं,
हिम्मत वाले कभी कदम नहीं रोक पाएं।
छोटी सी कोशिश भी रंग दिखाती है,
मेहनत की रोशनी मंजिल तक ले जाती है।
आंधियों से कह दो अब डरना नहीं है,
सपनों के पंखों को अब थमना नहीं है।
गिरकर संभलना ही जीवन की कहानी है,
हर मुश्किल के पीछे छिपी एक निशानी है।
जो खुद पर विश्वास बनाए रखते हैं,
वही दुनिया में अपनी पहचान रखते हैं।
नदी भी पत्थरों से टकराती रहती है,
फिर भी अपनी राह बनाती रहती है।
सूरज हर दिन नया उजाला लाता है,
हर अंधेरे को दूर भगाता है।
तुम भी अपने सपनों को साकार करो,
मेहनत से जीवन का श्रृंगार करो।
क्योंकि जीत उसी की होती है संसार में,
जो चलता रहता है अपने विश्वास के आधार में।

जानकारी

फीनिक्स पक्षी : राख से फिर जन्म लेने वाली उम्मीद की कहानी

'अंत कभी-कभी एक नई शुरुआत का संदेश लेकर आता है।'

दुनिया की प्राचीन कथाओं में एक ऐसे अद्भुत पक्षी का वर्णन मिलता है, जिसे फीनिक्स कहा जाता है। यह पक्षी अपनी अनोखी विशेषता के कारण सदियों से लोगों के लिए साहस, बदलाव और नई शुरुआत का प्रतीक माना जाता है।

कहा जाता है कि फीनिक्स पक्षी बहुत सुंदर और शक्तिशाली होता था। उसके पंख सुनहरे और लाल रंग के होते थे। वह लंबे समय तक जीवित रहता था। जब उसका जीवन पूरा होने लगता था, तब वह एक विशेष स्थान पर जाकर अपना घोंसला बनाता था और उसमें बैठ जाता था।

कथाओं के अनुसार, फीनिक्स अपने घोंसले के साथ अग्नि में समा जाता था। लेकिन कुछ समय बाद उसी राख से एक नया फीनिक्स जन्म लेता था। यह नया पक्षी फिर से जीवन की शुरुआत करता था और अपनी नई यात्रा पर निकल पड़ता था।

भले ही फीनिक्स एक पौराणिक पक्षी है, लेकिन इसकी कहानी हमें जीवन की एक बड़ी सीख देती है। यह बताती है

कि मुश्किल समय आने पर हमें हार नहीं माननी चाहिए। जैसे फीनिक्स राख से उठकर नई शुरुआत करता है, वैसे ही इंसान भी अपनी परेशानियों से सीख लेकर आगे बढ़ सकता है। फीनिक्स को दुनिया की कई संस्कृतियों में परिवर्तन और आशा का प्रतीक माना गया है। इसकी कहानी हमें प्रेरणा देती है कि असफलता जीवन का अंत नहीं होती, बल्कि उससे सीख लेकर सफलता की ओर बढ़ा जा सकता है।

चींटी : छोटी सी मेहनत से बड़ी सीख देने वाला जीव

'छोटे कदमों से ही बड़ी मंजिल तक पहुंचा जा सकता है।

दुनिया के सबसे छोटे लेकिन मेहनती जीवों में से एक है चींटी। आकार में बेहद छोटी होने के बावजूद चींटी अपने अनुशासन, मेहनत और धैर्य के कारण हमें जीवन की बड़ी सीख देती है। यह छोटा सा जीव कभी हार नहीं मानता और लगातार अपने लक्ष्य की ओर बढ़ता रहता है।

चींटी को हमेशा समूह में काम करते हुए देखा जाता है। वह अपने साथियों के साथ मिलकर भोजन इकट्ठा करती है और भविष्य के लिए उसे सुरक्षित रखती है। गर्मी हो या बारिश, चींटी अपने काम में लगी रहती है। वह मौसम और परिस्थितियों की परवाह किए बिना मेहनत करती रहती है। चींटी की सबसे

बड़ी खासियत है कि वह असफलता से डरती नहीं है। यदि वह किसी ऊंची जगह पर चढ़ते समय गिर जाती है, तो दोबारा प्रयास करती है। कई बार कोशिश करने के बाद भी वह अपने लक्ष्य तक पहुंचने का प्रयास नहीं छोड़ती। कहा जाता है कि चींटी अपने वजन से कई गुना ज्यादा सामान उठा सकती है। यह उसकी ताकत और मेहनत का उदाहरण है। वह हमें सिखाती है कि सफलता पाने के लिए केवल बड़ा होना जरूरी नहीं, बल्कि मेहनत और दृढ़ निश्चय होना जरूरी है। प्रकृति में चींटी का जीवन हमें अनुशासन और सहयोग का महत्व भी बताता है। चींटियां मिलकर काम करती हैं, इसलिए वे बड़ी से बड़ी चुनौतियों का सामना कर लेती हैं। चींटी हमें यह संदेश देती है कि जीवन में कठिनाइयां आना स्वाभाविक है, लेकिन जो व्यक्ति लगातार प्रयास करता रहता है, वह एक दिन सफलता जरूर प्राप्त करता है।

प्रेरक प्रसंग

अंधेरे से उजाले तक का सफर : सुधा चंद्रन ने हिम्मत से बदली जिंदगी की कहानी

हार मान लेने वालों के लिए मुश्किलें अंत होती हैं, लेकिन हिम्मत रखने वालों के लिए वही नई शुरुआत बन जाती हैं।

सुधा चंद्रन का जीवन संघर्ष, साहस और आत्मविश्वास की ऐसी कहानी है, जो हर व्यक्ति को आगे बढ़ने की प्रेरणा देती है। बचपन से ही नृत्य में रुचि रखने वाली सुधा ने छोटी उम्र में ही भरतनाट्यम सीखना शुरू कर दिया था। उनका सपना एक बड़ी नृत्यांगना बनने का था।

एक दिन ऐसा हादसा हुआ जिसने उनकी जिंदगी बदल दी। एक दुर्घटना में उनके पैर में गंभीर चोट आई और डॉक्टरों को उनका पैर काटना पड़ा। यह समय उनके लिए बेहद कठिन था। जिस कला को उन्होंने जीवन का हिस्सा बनाया था, उससे दूर होने का दर्द उन्हें परेशान करता था।

लेकिन सुधा ने परिस्थितियों के आगे हार नहीं मानी। उन्होंने अपने आत्मविश्वास और परिवार के सहयोग से दोबारा खड़े होने का फैसला किया। कृत्रिम पैर के सहारे उन्होंने फिर से नृत्य सीखना शुरू किया। शुरुआत आसान नहीं थी। कई बार दर्द और कठिनाइयों का सामना करना पड़ा, लेकिन उनका हौसला कभी कमजोर नहीं हुआ।

लगातार अभ्यास और मेहनत के बाद सुधा ने मंच पर दोबारा वापसी की। उन्होंने साबित कर दिया कि शारीरिक कमी किसी इंसान की प्रतिभा और सपनों को खत्म नहीं कर सकती। उनकी कला और संघर्ष ने उन्हें देश-दुनिया में पहचान दिलाई।सुधा चंद्रन ने अपने जीवन से यह संदेश दिया कि सफलता पाने के लिए शरीर से ज्यादा मजबूत इरादों की जरूरत होती है। उन्होंने हजारों लोगों को प्रेरित किया कि मुश्किल समय में भी उम्मीद और मेहनत का साथ नहीं छोड़ना चाहिए।

आज उनका नाम उन लोगों में शामिल है, जिन्होंने अपनी कमजोरी को अपनी ताकत बना लिया। उनकी कहानी बताती है कि जीवन में आने वाली चुनौतियां हमें रोकने के लिए नहीं, बल्कि और मजबूत बनाने के लिए आती हैं।

'अगर मन में विश्वास हो तो कोई भी मंजिल दूर नहीं होती।

बिंदु मिलाओ

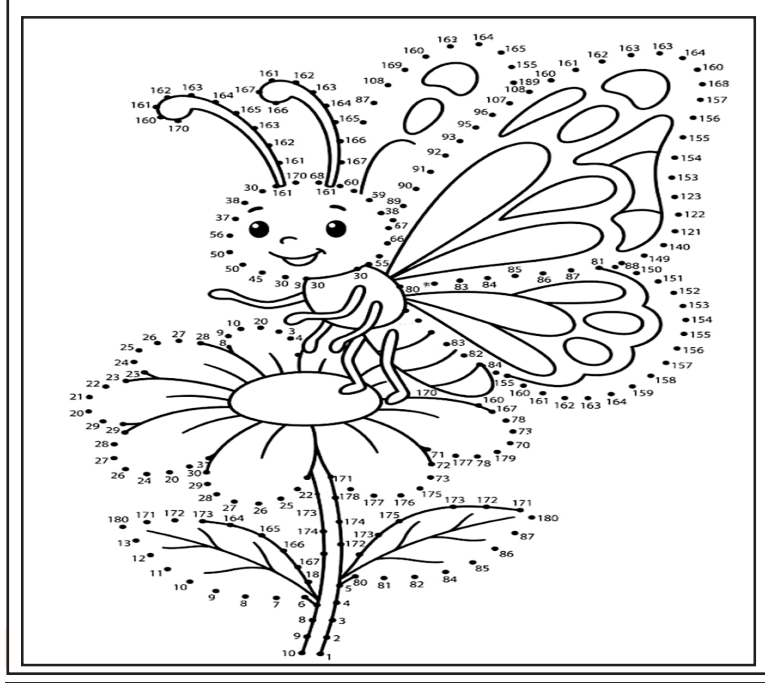

रंग भरो

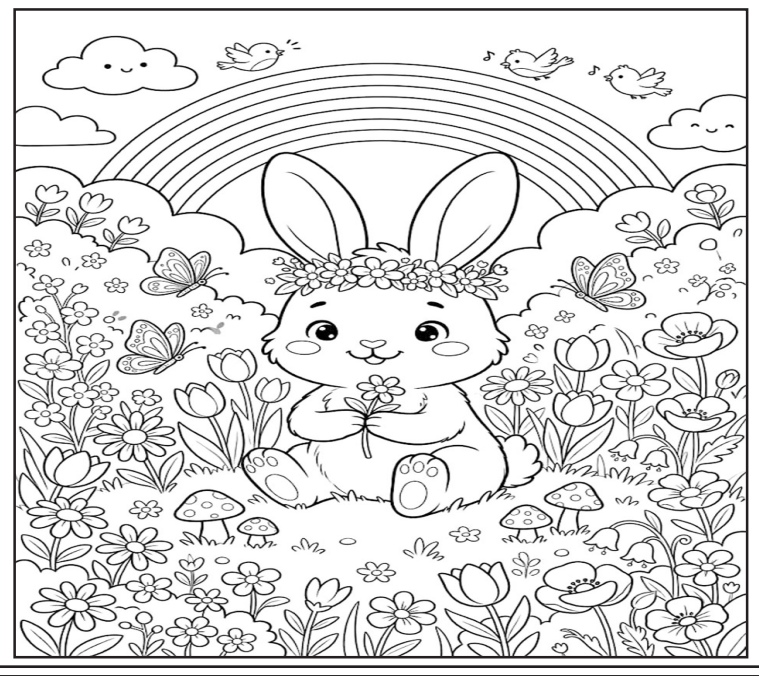

बच्चों अपनी कहानियां, कविताएं, पेंटिंग्स , लेख, रचनाएं आदि bhopalnav@gmail.com **पर मेल करें .**